भगवद् कथाओं का आधुनिक मर्म

आचार्यसत्यनारायण पाटोदिया
मो. 9314877066

कलियुग में मनुष्यों के दुःख बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए अपने दुःखों का निवारण करने हेतु मंदिरों में भीड़ बढ़ती जा रही है। मेरा बचपन उज्जैन में बीता। उन दिनों, जब हमारे मोहल्ले में शादी ब्याह के अवसर पर कोई लाउडस्पीकर लगा कर जोर–जोर से गाने बजाने लगता था और उन्हीं दिनों परीक्षाओं का समय होता था, तब मैं घर से पुस्तकें लेकर महाकालेश्वर के मंदिर में जाकर बैठ जाता था और वहाँ के शांतिपूर्ण वातावरण में दिनभर पढ़ाई करके सायंकाल में घर लौटता था। आज उसी महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन करने जाना हो तो 3–4 घंटे लाईन में लगना पड़ता है और यदि कोई पर्व या त्यौहार हो, तब 7–8 घंटे लाइन में लगने के पश्चात ही महाकालेश्वर के दर्शन हो पाते हैं। इससे यह लगता है कि कितने दुःखियारे भगवान के पीछे पड़े हैं।

उस जमाने में कथा वाचक पंडित जी हारमोनियम बजाते हुए भगवान की कथा सुनाया करते थे। ज्यादा हुआ तो एक लाउडस्पीकर लगा लेते थे। आज वे सभी कथावाचक टी.वी. पर 10–15 लाख रुपये देकर अपना लाइव टेलीकास्ट कराते हैं। अब वही कथावाचक परम पूजनीय महान संत महात्मा बन गए हैं और भोली–भाली जनता को अभी भी सत्युग, त्रेता युग और द्वापर युग की कहानियों को भक्ति रस की मीठी चाशनी में डुबाकर परोस रहे हैं। श्रोताओं को उन पौराणिक कहानियों को चटखारे लेकर सुना रहे हैं और अपनी झोली भर रहे हैं। वर्तमान में भागवत कथा का एक ऐसा दौर चल पड़ा है कि जिसे देखो वही भागवत कथा करा कर असीम पुण्य लूट रहा है और वर्तमान की समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए अतीत के सागर में गोते लगा रहा है। चूँकि कलियुग में किसी भी भगवान ने अभी तक अवतार नहीं लिया है, इसलिए सत्युग, त्रेता युग और द्वापर युग की कथा कहानियों में ही भक्त श्रोताओं को घुमाया जा रहा है। इन सुनी सुनाई कथा कहानियों को ही मोड़–तोड़कर, नमक मिर्च लगाकर भाव भंगिमा के साथ ये

कथावाचक परोस रहे हैं और वर्तमान काल की समस्याओं के समाधान के लिए कुछ भी आधुनिक उपाय नहीं बताते हैं।

अब समय आ गया है कि रामायण, महाभारत और भागवत–पुराण आदि की कथा कहानियों का वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करके, उनसे वर्तमान काल में चल रहे कलियुग की समस्याओं का सामना कैसे करें, इस बात को बताने की आवश्यकता है। समय की माँग के अनुसार वर्तमान में हम कैसे जीवन जिएं, जिससे कि हम सुख शांति से भर उठें और हमारा जीवन सुखी हो जावे। आज अधिक से अधिक धन कमाने को ही सुखी होने का साधन एवं लक्ष्य माना जाने लगा है। हम यह तो भूल ही गए हैं कि हम सुख–शांति से कैसे जी सकते हैं और ये कथा वाचक भी हमें इन कथाओं से भगवान के भजन के अलावा ऐसा कोई व्यावहारिक रास्ता नहीं बताते हैं कि मानव जीवन दुःखों से बाहर निकल आवे। ये कथावाचक पुरानी सुनी सुनाई, रटी–रटाई कहानियों को ही दोहराते आ रहे हैं। जबकि इन कथाओं का नये परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करके मानव जीवन को मानसिक रूप से सबल और सशक्त बनाया जाना चाहिये, जिससे कि वर्तमान काल में आने वाली समस्याओं का बहादुरी से सामना किया जा सके। नई पीढ़ी तो वैज्ञानिक तरीके से सोचती है, उसे विज्ञान की कसौटी पर कसना चाहती है और जो कोई बात तर्क सम्मत होगी, बुद्धि सम्मत होगी, उसको ही वह स्वीकार करती है। इसीलिए ऐसी भागवत कथाओं में अधिकतर भीड़ अधेड़ महिलाओं और बुजुर्गों की ही दिखाई देती है। दोपहर तक घर के सारे कामों को निबटाकर फुरसत हो जाने पर महिलाएं इन भागवत कथाओं में जाकर बैठ जाती है और 2–3 घंटे का समय बिताकर घर लौट आती है। भगवान की कथा कहानी सुनना मन को बड़ा अच्छा लगता है और इसीलिए इनसे मनोरंजन भी अच्छा हो जाता हैं, परन्तु अपने जीवन में भगवान के आदर्शों को कोई नहीं उतारना चाहता है। जिस दिन हम अपने मन में यह ठान लेंगे कि भगवान हमसे जो चाहता है यानि कि भगवान के गुणों को हम अपने जीवन में धारण करना शुरू कर देंगे, उसी दिन से हमारी प्रगति शुरू हो जाएगी। तब ही, भगवान की भक्ति का रहस्य हमारी समझ में आ सकेगा।

आपका मंगल हो।

आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया
नैतिक शिक्षाविद् एवं आध्यात्मिक प्रेरक